

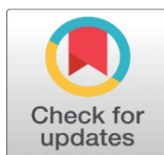
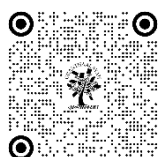
ROLE OF NEP 2020 IN REDUCING RISING DISSATISFACTION AMONG STUDENTS

विद्यार्थियों में बढ़ते असंतोष को कम कर छात्र कल्याण में एनईपी 2020 की भूमिका

Poonam Mishra¹, Damodar Prasad Sharma²✉

¹ Associate Professor, Department of Education, Apex University, Jaipur, Rajasthan, India

² Department of Education, Apex University, Jaipur, Rajasthan, India



Corresponding Author

Damodar Prasad Sharma,
damodarsharma0085@gmail.com

DOI

[10.29121/shodhkosh.v5.i3.2024.6147](https://doi.org/10.29121/shodhkosh.v5.i3.2024.6147)

Funding: This research received no specific grant from any funding agency in the public, commercial, or not-for-profit sectors.

Copyright: © 2024 The Author(s). This work is licensed under a [Creative Commons Attribution 4.0 International License](https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/).

With the license CC-BY, authors retain the copyright, allowing anyone to download, reuse, re-print, modify, distribute, and/or copy their contribution. The work must be properly attributed to its author.



ABSTRACT

English: The National Education Policy (NEP) 2020 marks a significant shift in India's educational landscape by emphasising a holistic and multidisciplinary approach that integrates cognitive, emotional and social development. The policy underlines the important role of student well-being alongside academic achievement and advocates for an educational environment that supports mental and emotional health. To align with the vision of NEP 2020, this study explores strategies to enhance student well-being by reducing rising dissatisfaction among students, focusing on teacher-student relationships, school climate, innovative teaching methods, and participation in creative and physical activities. It also examines ways to promote well-being, including student support services. By integrating these strategies, educational institutions can address issues by reducing rising dissatisfaction among students, foster a supportive learning environment, and contribute to the overall development of students. This paper provides practical ways to implement the objectives of NEP 2020 and improve the overall well-being of students.

Hindi: राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) 2020 संज्ञानात्मक, भावनात्मक और सामाजिक विकास को एकीकृत करने वाले समग्र और बहु-विषयक दृष्टिकोण पर जोर देकर भारत के शैक्षिक परिदृश्य में एक महत्वपूर्ण बदलाव को चिह्नित करती है। यह नीति शैक्षणिक उपलब्धि के साथ-साथ छात्र कल्याण की महत्वपूर्ण भूमिका को रेखांकित करती है और मानसिक और भावनात्मक स्वास्थ्य का समर्थन करने वाले शैक्षिक वातावरण की वकालत करती है। एनईपी 2020 के दृष्टिकोण के साथ संरेखित करने के लिए, यह अध्ययन विद्यार्थियों में बढ़ते असंतोष को कम कर शिक्षक-छात्र संबंधों, स्कूल के माहौल, नवीन शिक्षण विधियों और रचनात्मक और शारीरिक गतिविधियों में भागीदारी पर ध्यान केंद्रित करते हुए छात्र कल्याण को बढ़ाने के लिए रणनीतियों की खोज करता है। यह छात्र सहायता सेवाओं सहित कल्याण को बढ़ावा देने के तरीकों की भी जांच करता है। इन रणनीतियों को एकीकृत करके, शैक्षणिक संस्थान विद्यार्थियों में बढ़ते असंतोष को कम कर मुद्दों को संबोधित कर सकते हैं, एक सहायक शिक्षण वातावरण को बढ़ावा दे सकते हैं और छात्रों के समग्र विकास में योगदान दे सकते हैं। यह पत्र एनईपी 2020 के उद्देश्यों को लागू करने और छात्रों के समग्र कल्याण में सुधार के लिए व्यावहारिक तरीकों की जानकारी प्रदान करता है।

Keywords: Student Dissatisfaction, NEP 2020, New Teaching Methods, छात्र असंतोष, एनईपी 2020, नवीन शिक्षण विधियाँ

1. प्रस्तावना

राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) 2020 भारत के शैक्षिक ढांचे में एक ऐतिहासिक बदलाव का प्रतिनिधित्व करती है, जो शिक्षा के लिए एक समग्र, लचीले और बहु-विषयक दृष्टिकोण पर जोर देती है। यह नीति छात्रों के संज्ञानात्मक, भावनात्मक और सामाजिक विकास को पोषित करने के लिए तैयार की गई है, जिससे उन्हें 21वीं सदी की जटिलताओं के लिए तैयार किया जा सके। राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी), 2020 की कल्पना है कि 'शिक्षा का उद्देश्य केवल संज्ञानात्मक विकास ही नहीं होगा, बल्कि चरित्र निर्माण और 21वीं सदी के प्रमुख कौशल से लैस समग्र और सर्वांगीण व्यक्ति बनाना भी होगा। यह छात्रों में ऐसे गुण और कौशल भी पैदा करता है जो उनके विकास, आत्म-संरक्षण और सतत विकास में सहायता करते हैं तथा विद्यार्थियों में बढ़ते असंतोष को कम करते हैं। यह एक ऐसे शैक्षिक वातावरण की वकालत करता है जो न केवल बौद्धिक विकास पर बल्कि छात्रों के मानसिक और

भावनात्मक स्वास्थ्य पर भी ध्यान केंद्रित करता है। एनईपी के विज़न को आगे बढ़ाने के लिए, आत्मनिर्भर भारत अभियान के हिस्से के रूप में शिक्षा मंत्रालय की एक पहल मनोदर्पण को कोविड-19 और उसके बाद के समय में असंतोष और भावनात्मक कल्याण के लिए छात्रों, शिक्षकों और परिवारों को मनोवैज्ञानिक सहायता प्रदान करने के लिए शुरू किया गया है। एक बच्चे के सीखने में भावनात्मक घटकों के महत्व का अध्ययन करने के लिए, मनोदर्पण सेल द्वारा स्कूली छात्रों के एक सर्वेक्षण से पता चला है कि माध्यमिक स्तर पर, छात्रों ने पढ़ाई, परीक्षा और परिणामों से संबंधित चिंता के उच्च स्तर की सूचना दी। उन्होंने एकाग्रता में कठिनाई के उच्च स्तर और तीव्र मनोदशा के झूलों का अनुभव करने की भी सूचना दी। वर्तमान अध्ययन की आवश्यकता: किशोरावस्था, विकास के चरण, जो मुख्य रूप से स्कूल में बिताए जाते हैं, महत्वपूर्ण अवधि होती है जब छात्र व्यक्तिगत कल्याण और जीवन शैली विकल्पों के प्रति दीर्घकालिक मानसिकता विकसित करते हैं। शैक्षणिक और सामाजिक दबावों के कारण वर्तमान समय में छात्रों में चिंता, अवसाद, असंतोष और तनाव बढ़ रहा है। ये मानसिक समस्याएं उनके शैक्षणिक प्रदर्शन, सामाजिक संपर्क और समग्र कल्याण को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित करती हैं। भारत की राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 छात्रों के समग्र कल्याण और विकास के महत्व को पहचानती है और शिक्षा के लिए एक समग्र दृष्टिकोण की आवश्यकता पर जोर देती है जिसमें छात्रों पर ध्यान देना शामिल है। चूंकि शैक्षणिक संस्थान छात्रों के बीच बढ़ते छात्र असंतोष के मुद्दों से जूझ रहे हैं, एनईपी 2020 इन चुनौतियों से निपटने के लिए समय पर और आवश्यक रूपरेखा प्रदान करता है। नीति में कहा गया है कि छात्र कल्याण समग्र विकास का महत्वपूर्ण घटक है, और स्कूलों को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि उन्हें

पाठ्यक्रम में एकीकृत किया जाए। एनईपी 2020 ने इस बात पर जोर दिया है कि छात्रों के कल्याण को बढ़ावा देना बहुत महत्वपूर्ण है क्योंकि संताप वाले छात्रों के विघटनकारी व्यवहार में शामिल होने की संभावना कम होती है। वे बेहतर आत्म-नियमन प्रदर्शित करते हैं और स्कूल के नियमों और मानदंडों का सम्मान करने की अधिक संभावना रखते हैं। छात्रों का कल्याण छात्रों के समग्र विकास और पोषण के लिए आधारभूत आधार बनाता है; और स्कूली जीवन के अंदर और बाहर, दोनों जगह इष्टतम प्रदर्शन सुनिश्चित करने के लिए एक महत्वपूर्ण अग्रदूत हैं। यह लेख छात्र असंतोष को कम करने तथा एनईपी 2020 के उद्देश्यों के अनुरूप स्कूली बच्चों की भलाई को बढ़ाने के लिए नियोजित किया जा सकता है।

2. अध्ययन के उद्देश्य

वर्तमान अध्ययन के निम्नलिखित उद्देश्य हैं:-

- 1) विद्यार्थियों में बढ़ते असंतोष को कम कर उनके हितों के अनुरूप एनईपी 2020 की सिफारिशों का विश्लेषण करना।
- 2) सकारात्मक और समावेशी स्कूल वातावरण विकसित करने में शैक्षणिक रणनीतियों के प्रभाव का अध्ययन करना।
- 3) छात्र असंतोष को कम करने में स्कूल के माहौल की भूमिका की समीक्षा करना।

3. संबंधित साहित्य की समीक्षा

बेयर, जी. जी. (2024) ने इस बात पर प्रकाश डाला कि शिक्षकों और छात्रों के बीच सम्मानजनक और भरोसेमंद संबंधों को बढ़ावा देने से छात्र असंतोष कम हुआ है तथा उनके परिणामों में सुधार हुआ है।

सेवानी, अशोक (2022) ने अपने अध्ययन में यह पाया कि भावनात्मक बुद्धिमत्ता और लचीलापन छात्र असंतोष को कम करने में महत्वपूर्ण हैं और विशिष्ट समस्याओं वाले लोगों के बीच हस्तक्षेप के रूप में अभिव्यंजक कला चिकित्सा का व्यापक रूप से उपयोग किया जाता है।

ड्रिंग, एल., भगत एट अल. (2020) के अध्ययन से पता चला है कि फ्लिपड क्लासरूम दृष्टिकोण का सीखने की उपलब्धि और सीखने की प्रेरणा पर मध्यम प्रभाव आकार था। समावेशी शिक्षा प्रथाओं और विभेदित निर्देश से सभी छात्रों को लाभ होता है, विशेष रूप से विविध सीखने की ज़रूरतों वाले छात्रों को (टॉमलिसन, 2014)। विभिन्न सीखने की शैलियों और क्षमताओं को समायोजित करने के लिए शिक्षण विधियों को अनुकूलित करके, शिक्षक अधिक समावेशी और न्यायसंगत सीखने का माहौल बना सकते हैं।

डुरलक एवं अन्य (2011) के अनुसार, जो छात्र सामाजिक-भावनात्मक शिक्षण (एसईएल) कार्यक्रमों में भाग लेते हैं, वे बेहतर कक्षा व्यवहार, तनाव और अवसाद को प्रबंधित करने की बड़ी हुई क्षमता और खुद, दूसरों और स्कूल के बारे में बेहतर दृष्टिकोण प्रदर्शित करते हैं।

मरे-हार्वे, आर. (2010) के अध्ययन से पता चला है कि शिक्षकों और छात्रों के बीच संबंधों की गुणवत्ता, जो परिवार और साथियों के साथ तुलना की जाती है, भलाई पर सबसे मजबूत प्रभाव डालती है।

मरे हार्वे रोज़लिंग (2010) द्वारा किए गए अध्ययन से पता चला है कि शिक्षकों और छात्रों के बीच संबंधों की गुणवत्ता, जो परिवार और साथियों के साथ तुलना की जाती है, कल्याण पर सबसे मजबूत प्रभाव डालती है।

जेनिंग्स और ग्रीनबर्ग (2009) द्वारा किए गए एक अध्ययन में छात्र जुड़ाव और शैक्षणिक उपलब्धि को बढ़ावा देने में सकारात्मक शिक्षक-छात्र संबंधों के महत्व पर जोर दिया गया है। विश्वास, सम्मान और सकारात्मक बातचीत की विशेषता वाला एक सहायक शिक्षण वातावरण छात्रों की प्रेरणा और सीखने के परिणामों को काफी हद तक बढ़ा सकता है।

रेटी (2008) और मालचियोडी (2013) के अध्ययन से पता चलता है कि शारीरिक गतिविधि और रचनात्मक कलाओं में संलग्नता संज्ञानात्मक कार्य में सुधार, तनाव को कम कर सकती है और भावनात्मक विनियमन को बढ़ा सकती है।

संक्षेप में, सकारात्मक शिक्षक-छात्र संबंधों को बढ़ावा देना, एक सहायक स्कूल का माहौल और नवीन शिक्षण विधियाँ छात्र परिणामों को महत्वपूर्ण रूप से बढ़ाती हैं। सामाजिक-भावनात्मक शिक्षा, समावेशी प्रथाओं और रचनात्मक और शारीरिक गतिविधियों में संलग्नता को शामिल करना छात्र असंतोष को कम करने में महत्वपूर्ण हैं तथा छात्र की भलाई और अकादमिक सफलता का समर्थन करता है। छात्र कल्याण को बढ़ावा देने के लिए सरकारी एजेंसियों द्वारा पहले कौशल शिक्षा को बढ़ावा देना आवश्यक है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, शिक्षार्थियों के समग्र विकास पर बहुत जोर देती है इस पहल का उद्देश्य छात्रों में आत्मविश्वास, पर्यावरण के प्रति संवेदनशीलता और आजीवन सीखने की मानसिकता को बढ़ावा देना है। पाठ्यक्रम नीति में जोर दिया गया है कि छात्र असंतोष को कम करने के लिए स्वास्थ्य में बुनियादी प्रशिक्षण, जिसमें निवारक स्वास्थ्य, मानसिक स्वास्थ्य, अच्छा पोषण, व्यक्तिगत और सार्वजनिक स्वच्छता, आपदा प्रतिक्रिया और प्राथमिक चिकित्सा भी शामिल होगी, को पाठ्यक्रम में शामिल किया जाएगा, साथ ही शराब, तंबाकू और अन्य नशीले पदार्थों के हानिकारक और नुकसानदायक प्रभावों की वैज्ञानिक व्याख्या भी शामिल की जाएगी। नीति छात्रों में साक्षरता को बढ़ावा देने के लिए स्कूली पाठ्यक्रम में मानसिक स्वास्थ्य शिक्षा को शामिल करने की वकालत करती है। स्कूलों में स्वास्थ्य और वेलनेस क्लब सीबीएसई ने स्कूल में वेलनेस क्लब स्थापित करने की सिफारिश की है जो किसी व्यक्ति और समुदाय से संबंधित आदतों, दृष्टिकोण और ज्ञान को अनुकूल रूप से प्रभावित कर सकते हैं। ये क्लब इष्टतम स्वास्थ्य की प्राप्ति के लिए हमारे व्यवहार को संशोधित कर सकते हैं। स्कूल डांस क्लब, एरोबिक क्लब, योग, तैराकी, मोटापा, वजन बढ़ाने वाले क्लब, वेलनेस, व्यंजन क्लब, लाप्टर क्लब, पोषण संबंधी शैक्षणिक क्लब आदि जैसे क्लब भी शुरू कर सकते हैं।

4. शिक्षकों के लिए क्षमता निर्माण कार्यक्रम

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 छात्रों में असंतोष को कम करने के मुद्दों को संबोधित करने के लिए शिक्षकों और अन्य शैक्षिक कर्मियों की क्षमता निर्माण की आवश्यकता पर जोर देती है। पेशेवर विकास कार्यक्रमों के माध्यम से शिक्षकों को सुविधा प्रदान करने के लिए उपकरण और ज्ञान से लैस करें। इसमें बाल मनोविज्ञान और प्रभावी संचार तकनीकों को समझना शामिल है, जिसमें छात्रों की सीखने की शैलियों (दृश्य, श्रवण और गतिज सीखने की शैलियाँ) में अंतर, अध्ययन के अनुशासन, सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक और शैक्षिक पृष्ठभूमि के संदर्भ में छात्रों की पृष्ठभूमि की विविधता है।

5. सीखने की गति में अंतर

सीखने की विधा केंद्रित शिक्षाशास्त्र: सीखने के प्रमुख तरीके, अर्थात् भौतिक या ऑफलाइन, ऑनलाइन, हाइब्रिड या मिश्रित मोड, और फ्लिपड क्लासरूम, सीखने के प्रत्येक तरीके की विशेषता वाले संचार के चैनल/चैनलों के अनुकूल अलग-अलग शिक्षाशास्त्र की आवश्यकता होती है। इसलिए, इन तरीकों के माध्यम से शिक्षण और सीखने की प्रक्रिया में अंतराल से बचने के लिए उपयुक्त शिक्षाशास्त्र को तैयार करने और अपनाने की आवश्यकता है। छात्र सहायता सेवाएँ, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 तनाव और भावनात्मक समायोजन का प्रबंधन करने के लिए शैक्षणिक संस्थानों में परामर्श प्रणालियों के महत्व पर भी जोर देती है। स्कूलों को परामर्शदाताओं और मनोवैज्ञानिकों सहित मानसिक स्वास्थ्य पेशेवरों तक पहुंच प्रदान करनी चाहिए और यह सुनिश्चित करना चाहिए कि वे छात्रों को प्रभावी सहायता प्रदान करने के लिए प्रशिक्षित हों। स्कूलों को छात्रों, शिक्षकों और अभिभावकों के लिए जागरूकता अभियान और मानसिक स्वास्थ्य साक्षरता कार्यक्रमों सहित छात्र असंतोष को कम करने के संवर्धन कार्यक्रम भी विकसित और कार्यान्वित करने चाहिए विविधता को बढ़ावा देने वाली और बदमाशी को हतोत्साहित करने वाली नीतियों को लागू करें। अभिनव और समावेशी शिक्षण विधियाँ छात्रों की विविध सीखने की ज़रूरतों और शैलियों को पहचानने की ज़रूरत है।

प्रोजेक्ट-आधारित शिक्षण, सहयोगी गतिविधियाँ, प्रौद्योगिकी-संवर्धित निर्देश, फ्लिपड क्लासरूम शिक्षण आदि जैसी विभिन्न शिक्षण विधियों का उपयोग करके विभिन्न शिक्षार्थियों की ज़रूरतें पूरी की जा सकती हैं। स्कूल को यह भी सुनिश्चित करना चाहिए कि विशेष ज़रूरतों वाले छात्रों को उचित सहायता और सुविधाएँ मिलें। सभी छात्रों के लिए सीखने को सुलभ बनाने के लिए यूनिवर्सल डिज़ाइन फ़ॉर लर्निंग सिद्धांतों को लागू करना। शारीरिक और रचनात्मक गतिविधियों पर ज़ोर छद्मज्ञ के अनुसार, छात्रों की शारीरिक फिटनेस और अच्छी शारीरिक मुद्रा विकसित करके छात्रों की भलाई को बढ़ावा दिया जा सकता है। यह हर स्कूल में खेलों और खेलों को महत्व देकर और सभी स्कूली विषयों में शारीरिक शिक्षा को शामिल करके किया जा सकता है। शारीरिक स्वास्थ्य को बढ़ावा देने और तनाव को कम करने के लिए स्कूल की दिनचर्या में नियमित शारीरिक गतिविधि को शामिल करें। खेल, योग और नृत्य जैसी गतिविधियाँ शामिल की जा सकती हैं। छात्रों को संगीत, नाटक और दृश्य कला जैसी रचनात्मक कलाओं में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित करने की आवश्यकता है। ये गतिविधियाँ भावनात्मक अभिव्यक्ति को बढ़ा सकती हैं, आत्मविश्वास बढ़ा सकती हैं और छात्रों के लिए एक चिकित्सीय आउटलेट प्रदान कर विद्यार्थियों में बढ़ते असंतोष को कम करने, अच्छे मानसिक स्वास्थ्य और कल्याण को बढ़ावा देने के लिए, स्कूलों में माइंडफुलनेस सत्र, विश्राम तकनीकों को नियोजित किया जा सकता है। स्कूल में, एक सहायक और समावेशी वातावरण जहाँ हर छात्र मूल्यवान और सम्मानित महसूस करता है, को सभी प्रकार के भेदभाव को हटाकर प्रोत्साहित किया जाना चाहिए।

छात्रों को अपने शैक्षणिक कार्यभार को प्रबंधित करने और तनाव को कम करने में मदद करने के लिए ट्यूशन, अध्ययन समूहों और संसाधनों के माध्यम से शैक्षणिक तनाव को कम करने की आवश्यकता है।

छात्रों की भलाई का आकलन करने और किसी भी संभावित मुद्दों को दूर करने के लिए नियमित जांच का कार्यान्वयन।

शिक्षकों और स्कूल प्रशासकों को जागरूकता, तनाव प्रबंधन, छात्र असंतोष को कम करने और मुकाबला करने की रणनीतियों पर कार्यशालाएं और संसाधन प्रदान किए जा सकते हैं।

छात्र कल्याण को पूरे स्कूल / संस्थान के सामूहिक प्रयास के माध्यम से सहयोगात्मक रूप से काम करके और एक बहुआयामी दृष्टिकोण को एकीकृत करके प्राप्त किया जा सकता है।

6. निष्कर्ष

अंत में, राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) 2020 भारत में शिक्षा के लिए एक परिवर्तनकारी दृष्टिकोण का प्रतिनिधित्व करती है, जो एक समग्र विकास ढांचे पर जोर देती है जो विद्यार्थियों में बढ़ते असंतोष को कम करने और कल्याण को शैक्षणिक विकास के साथ एकीकृत करती है। इस दृष्टिकोण के साथ तालमेल बिठाने के लिए, स्कूलों को ऐसी शैक्षणिक रणनीतियाँ अपनानी चाहिए जो सकारात्मक शिक्षक-छात्र संबंधों, सहायक स्कूली माहौल और नवीन शिक्षण विधियों को बढ़ावा दें। शिक्षकों के लिए क्षमता निर्माण और मजबूत छात्र सहायता सेवाओं के साथ-साथ जीवन कौशल शिक्षा, मानसिक स्वास्थ्य पाठ्यक्रम और कल्याण क्लबों को शामिल करने से छात्र कल्याण में उल्लेखनीय वृद्धि हो सकती है। इसके अलावा, विविध शिक्षण विधियों को अपनाना, समावेशी वातावरण बनाना और शारीरिक और रचनात्मक गतिविधियों को बढ़ावा देना छात्रों के समग्र विकास का समर्थन करेगा। इन दृष्टिकोणों को एकीकृत करके, शैक्षणिक संस्थान छात्रों के सामने आने वाली मानसिक स्वास्थ्य चुनौतियों का प्रभावी ढंग से समाधान कर सकते हैं और एनईपी 2020 के उद्देश्यों के अनुसार उनके व्यापक विकास में योगदान दे सकते हैं।

संदर्भ

- बेयर, जी. जी. (2020). सकारात्मक शिक्षक-छात्र संबंधों को बढ़ावा देना। 'स्कूल के माहौल को बेहतर बनाने' में (पहला संस्करण, पृष्ठ 13). रूटलेज.
<https://doi.org/10-4324/9781351170482>
- डर्लक, जे. ए., वीसबर्ग, आर. पी., डायमनिकी, ए. बी., टेलर, आर. डी., और शेलिंगर, के. बी. (2011). छात्रों की सामाजिक और भावनात्मक शिक्षा को बढ़ाने का प्रभाव: स्कूल-आधारित सार्वभौमिक हस्तक्षेपों का मेटा-विश्लेषण। बाल विकास, 82(1), 405-432। <https://doi.org/10-1111/j-14678624-2010-01564>.
- जेनिंग्स, पी. ए., और ग्रीनबर्ग, एम. टी. (2009). प्रोसोशल क्लासरूम: छात्र और शिक्षक के परिणामों के संबंध में शिक्षक की सामाजिक और भावनात्मक क्षमता। शैक्षिक अनुसंधान की समीक्षा, 79(1), 491-525। <https://doi.org/10-3102/0034654308325693>
- मरे-हार्व, आर. (2010). छात्रों की शैक्षणिक उपलब्धि, मनोवैज्ञानिक स्वास्थ्य और स्कूल में कल्याण पर संबंधों का प्रभाव। शैक्षिक और बाल मनोविज्ञान, 27(1), 104-115। <https://doi.org/10-53841/bpsecp-2010-27-1-104>
- नोरोन्हा, वी.एम., और डी'मेलो, एल. (2024). भावनात्मक बुद्धिमत्ता और लचीलेपन पर अभिव्यंजक कला जुड़ाव का प्रभाव: एक व्यवस्थित समीक्षा। इंजीनियरिंग, प्रौद्योगिकी और विज्ञान में आधुनिकीकरण के अंतर्राष्ट्रीय शोध जर्नल, 6(1), 2145. <https://www-irjmets-com>
- झोंग, एल., भगत, के.के., जेन, वाई., और झांग, एक्स. (2020). छात्रों की सीखने की उपलब्धि और सीखने की प्रेरणा पर फ्लिप क्लासरूम की प्रभावशीलता: एक मेटा-विश्लेषण। शैक्षिक प्रौद्योगिकी और समाज, 23;1 द्द 1.15 पृ.
[https://doi.org/10.30191/ETS.202001_23\(1\).0001](https://doi.org/10.30191/ETS.202001_23(1).0001).
https://www.ugc.gov.in/pdfnews/7900069_Guidelines-PEA.pdf.